Omniscient
(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal)
Vol 4 Issue 2 April-June 2026 EISSN: 2583-7575

प्रयागराज में प्रतियोगी परीक्षा एवं उच्चशिक्षारत प्रवासी युवा: स्थिति और चुनौतियाँ

ज़बीहुल्लाह[*1], मुनीर इल्लाथ[2], स्तुति प्रजापति[3]

[1]शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[3]शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

*Corresponding Author: zabih05598@gmail.com

Available at https://omniscientmjprujournal.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20625381

सारांश

प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) एक ऐतिहासिक, धार्मिक नगरी के साथ ही शिक्षा के मुख्य केंद्र के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ आस पास के जिलों और पड़ोसी राज्यों से प्रतिवर्ष हजारों छात्र अपनी अकादमिक शिक्षा पूर्ण करने तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने आते हैं। विभिन्न जाति, धर्म और सांस्कृतिक पहचान को अपने साथ लेकर आए छात्र गंतव्य स्थल पर विभिन्न प्रकार की समस्या और चुनौतियों का सामना करते हैं। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (पूर्व नाम इलाहाबाद) जिला में पढ़ने आए प्रवासी युवा का चुनौतियों और समस्याओं पर आधारित है तथा मुख्य रूप से विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्टभूमि से आए छात्रों के साथ हो रहे भेदभाव पर भी आधारित हैं। ये युवा शिक्षा के द्वारा समाज और समुदाय में अपनी और परिवार की सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता के उत्थान के लिए भी प्रयास करते है। मुख्यता ग्रामीण समुदाय से आए युवा अपने साथ परिवार की जिम्मेदारी भी लेकर आते हैं जिनको यह उम्मीद होती है की पढ़-लिख कर नौकरी मिलने से परिवार की जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाया जा सकता है। यह अध्ययन यह भी देखने का प्रयास कर रहा है कि ग्रामीण क्षेत्र से आए छात्र गंतव्य स्थल पर समायोजन और एकीकरण में किस तरह की समस्या और चुनौतियों का सामना करते हैं। इसके साथ ही गंतव्य स्थल पर नेटवर्क किस तरह की भूमिका का निष्पादन करता है। छात्रों के पास दिशानिर्देश और जागरूकता की कमी के साथ प्रवास का अनुभव भी कम होता है।

मुख्य शब्द : छात्र, चुनौती और समस्या, भेदभाव, समायोजन, गतिशीलता

प्रस्तावना

प्रवास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इस में एक व्यक्ति या परिवार एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करता है। इसके माध्यम से प्रवासी अपने उद्देश्य और सपनों को पूरा करने का भरपूर प्रयास करता है। जिसमें उसे विभिन्न प्रकार की चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रवास के इस प्रवाह में प्रवासी को सफलता और असफलता दोनों मिलती है। विभिन्न कारणों से जब प्रवासी अपने उद्देश्य और सपनों को पूरा करने में असफल हो जाता है तो वे सफल होने के लिए निरंतर संघर्ष करते रहते हैं । सफल प्रवास के माध्यम से एक व्यक्ति आर्थिक प्रगति के साथ समाज में प्रतिष्ठा, प्रस्थिति, सम्मान और शक्ति प्राप्त करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह बहुआयामी उद्देश्य महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि किसी भी समाज की गतिशीलता केवल आर्थिक उद्देश्य का परिणाम नहीं होती है, बल्कि संस्कृति और समाज में गहराई से अंतर्निहित होती है। ली (1966) के अनुसार पुश और पुल कारक प्रवास में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह

Received: 10-02-2026 Revised: 13-04-2026 Accepted:23-04-2026 Published:10-06-2026

से काम करता है, जो एक प्रवासी को अपने जन्म स्थान से गंतव्य स्थान तक ले जाता है । पुश कारक में मूल स्थान पर वह सुविधा उपलब्ध न होना जिससे सुविधानुसार जीवन यापन किया जा सके। जबकि पुल कारक अच्छे रोजगार, शिक्षा, स्वाथ्य और शहरी जीवन शैली से सम्बंधित होते हैं जो एक प्रवासी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। शिक्षा के प्रवास में पुश कारक के अंतर्गत मूल स्थान पर अच्छे शैक्षणिक संस्थान की कमी,अपर्याप्त शैक्षिक सुविधाएँ, तकनीकी सुविधाओं की कमी, और आर्थिक आस्थिरता शामिल है । दूसरी ओर, पुल कारक में नौकरी की सुरक्षा, तकनीकी सुविधा, शैक्षिक सुविधा और जीवन की गुणवत्ता शामिल है। जिसकी वजह से छात्र पढ़ने के लिए ऐसे शहरों में जाते हैं जहाँ पर ये सारी सुविधा उपलब्ध हो । पुश और पुल कारक आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय छात्र प्रवास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (ली एंड ब्रे, 2007) ग्रामीण क्षेत्रों में असमान शिक्षण संस्थान के कारण छात्र मुख्यता तौर पर अपने जन्म स्थान से अधिक सुविधा जनक और उच्च गुणवत्ता वाले क्षेत्रों की तरफ पढ़ने के लिए प्रवास करते हैं, (ओनो, 2001; वी वेन्होर्स्त) । प्रयागराज में छात्र विभिन्न जिलों और आसपास के राज्यों से पढ़ने के लिए आते हैं, क्योंकि यहाँ पर तैयारी करने के लिए कोचिंग सेंटर और शैक्षणिक संस्थान उपलब्ध हैं जहाँ पर छात्र अपनी सुविधा के अनुसार पढ़ता हैं। छात्र प्रवास सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अत्याधिक महत्तव की घटना बनता जा रहा है ।

उच्च शिक्षा संस्थान के असमान वितरण के कारण देश के कुछ चुनिंदा इलाके में विद्यार्थी प्रवासियों का एकत्रण हुआ है (प्रधान, 2013) । मूलतया आर्थिक रूप से उन्नत क्षेत्रों में छात्र-छात्राओं का प्रवास मुख्य रूप से शैक्षिक बुनियादी ढांचे के असामन वितरण के कारण होता है। अविकसित क्षेत्रों में शैक्षणिक संस्थानों, नौकरी के अवसरों और आधारभूत सुविधाओं का अभाव युवाओं को उन्नत शहरी गंतव्य की ओर प्रवास करने के लिए प्रेरित करते हैं । लेकिन वर्तमान समय में यह देखने को मिल रहा है माता पिता अपनी बेटी को पढ़ने के लिए बड़े शहरों में भेज रहें हैं जिससे वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके और शादी विवाह में आने वाली बाधाओं से निजात मिल सके। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (पूर्व नाम इलाहाबाद) जिला में पढ़ने आए प्रवासी छात्रों की स्थितियों और समस्याओं पर आधारित है। प्रयागराज मे हजारों छात्र प्रत्येक वर्ष विभिन्न जिलों और पड़ोसी राज्यों से आते हैं। अध्ययन के इस प्रवास में कई तरह के छात्र शामिल होते हैं, जिसमे कुछ छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए, तो कुछ छात्र अपनी आकादमिक शिक्षा के लिए आते हैं, जो आगे चल कर समय की मांग के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने लगते हैं। गरीब परिवेश से होने के कारण परिवार ज्यादा समय तक पढ़ाई का खर्च वहन नहीं कर पाता हैं,जिससे छात्रों के ऊपर जल्दी सरकारी नौकरी प्राप्त करने की चुनौती होती है। अगर समय से नौकरी नहीं मिली तो पारिवारिक दबाव बढ़ जाता है, जिसके कारण बहुत से छात्रों को घर वापस लौटना पड़ता है और कोई काम भी करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, जिससे जीवन यापन किया जा सकता हो। पूरा समय पढ़ाई में लगाने के बाद कोई कौशल नहीं सीख पाते हैं । प्रवासी विद्यार्थियों के परिवार को भी उम्मीद होती है कि नौकरी मिलने से घर की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आएगा तथा सामाजिक स्थिति और सम्मान मे वृद्धि होगी, जिससे परिवार में ऊर्ध्वाधर गतिशीलता देखने को मेलेगी। ऐसा होता भी है कि जब परिवार के किसी सदस्य को कोई नौकरी मिलती है तो वह पूरा परिवार सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से गतिशील हो जाता है और समाज में उसके कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हो जाता है। इस प्रकार की गतिशीलता से प्रभावित होकर समाज और समुदाय के अन्य परिवार अपने बच्चों को पढ़ने के लिए घर से बाहर दूसरे शहर में भेजते हैं। यह जानते हुए की ज्यादा समय तक पढ़ने के बाद भी नौकरी न लगने पर पढ़ाई के खर्चों का वहन नहीं किया जा सकता है । इस चीज को चेतना में रखते हुए ऐसे शहर को चुनते हैं जहाँ कम खर्चों में आसानी से रह कर पढ़ाई की जा सके। कुछ छात्र ऐसे भी होते हैं जो अपनी पढ़ाई के शुरुआती दौर में मंहगे शहर मे रहकर पढ़ाई करते हैं फिर बीतते समय के साथ जब सफलता नहीं मिलती और परिवार

का दबाव बढ़ने लगता है तो दूसरे शहर मे चले जाते हैं जहां पढ़ाई में पैसा कुछ कम लगता है। अर्थात अपनी सुविधानुसार बदलते रहते हैं ।

पद्धतिशास्त्र

प्रस्तुत अध्ययन विशेष रूप से प्राथमिक तथ्य संकलन पर आधारित है, जिसमें तथ्य-संकलन के लिए गुणात्मक, मात्रात्मक और मिश्रित पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में तथ्य-संकलन के लिए गूगल फॉर्म (साक्षात्कार अनुसूची) का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में 120 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। जिसमें छात्र और छात्राएं सम्मिलित हैं। मात्रात्मक तथ्य संकलन करने के लिए गूगल फॉर्म (साक्षात्कार अनुसूची) का प्रयोग किया गया है, जिसके द्वारा 100 उत्तरदाताओं से आकड़ो का संकलन किया गया हैं। तथा गुणात्मक तथ्य संकलन के लिए एकल अध्ययन (केस स्टडी) का प्रयोग किया गया है, जिसमें सुविधाजनक और उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग करते हुए 20 चयनित उत्तरदाताओं के साथ उनके अनुभवों को गहराई से समझने का प्रयास किया गया है। ये एकल अध्ययन छात्रों के भेदभाव के व्यक्तिगत अनुभवों (जाति, धर्म, खान-पान), मानसिक तनाव, और समायोजन की समस्याओं के बारे में विस्तृत, संवादात्मक आख्यान प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण पाये गये।

व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति आधारित विश्लेषण

प्रवासी विद्यार्थीयों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्टभूमि यह तय करती है कि कितने समय तक परिवार के द्वारा पढ़ाई का खर्च उढ़ाया जा सकता है और कितने समय तक छात्र बाहर रह कर पढ़ाई कर सकते हैं। मध्यम और गरीब परिवेश से होने के कारण परिवार ज्यादा समय तक पढ़ाई का खर्च नहीं उठा पाता है। समय के साथ घर, परिवार की जिम्मेदारी भी बढ़ने लगती है जिससे उनके सामने यह चुनौती होती है कि अपनी सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति को देखते हुए प्रयास करें और समय रहते हुए सफल हो जाए। प्रवासी विद्यार्थीयो की चुनौती उनके प्रस्थिति, जाति, धर्म, संस्कृति के अनुसार अलग-अलग होती हैं।

प्रयागराज में छात्र विभिन्न परिवेश से आते हैं उनकी अपने क्षेत्र की एक अलग पहचान होती है। धर्म, जाति, खानपान, भाषा अलग होता है जिसके कारण छात्र *सांस्कृतिक आघात* (कल्चरल शॉक) की स्थिति में आ जाते हैं जिसको स्वीकार और अंतर्निहित करने में थोड़ा समय लगता है। इस स्थिति में अगर कोई संबंधी या मित्र पहले से रह रहा है तो चीजों को समझने और ग्रहण करने में आसानी होती है । जो एक प्रवासी के शुरूआती दिनों की समस्या का समाधान करने में सहायक होता है ।

प्रवासी विद्यार्थीयों के साथ धर्म, जाति, खानपान को लेकर भेदभाव

छात्रों ने बताया कि-*"मै जब पहली बार प्रयागराज पढ़ने आया था तो रहने के लिए* कमरा खोजने *गया, मकान मालिक ऊंची जाति का था, मेरी जाति पूछने के बाद कमरा देने से मना कर दिया।" (प्रतियोगी छात्र, उम्र 33* साल*)*

"मै पहले से एक कमरा में रह रहा था, लेकिन कमरा छोटा था कुछ दिन बाद मेरा छोटा भाई भी पढ़ने के लिए आ गया जिसके कारण एक दूसरे कमरे की जरूरत पड़ने लगी। मैंने और कुछ दोस्तों ने एक कमरा देखा और पाँच सौ रुपया भी मकान मालिक को दिया, और यह कहकर वापस आ गए की सामान एक दिन बाद शिफ्ट करेंगे। शाम को मकान मालिक ने फोन किया और पूछा हमने तो आप से यही नहीं पूछा आप किस जाति से आते हैं जब उसे पता चला की मुस्लिम है तो उसने कमरा देने से मन कर दिया।"(प्रतियोगी छात्र, उम्र 27 साल)

"मकान मालिक ने मुझसे बोला की मेरी कुछ शर्त है अगर मंजूर है तभी कमरा दूंगा, कमरा में मीट, मांस नहीं बना सकते हैं, क्यों की हमारे घर मे पूजा पाठ होता है और हम सभी लोग शाकाहारी हैं।" (प्रतियोगी छात्र, उम्र 25 साल)

छात्रों का एक तो उनके खान-पान को लेकर बहिष्कार किया जाता है और दूसरा जाति, नृजातीयता, के आधार पर भेद-भाव किया जाता है। इसलिए छात्र रहने के लिए ऐसा स्थान खोजते हैं जहाँ पर उनको रहने में किसी तरह की चुनौती और समस्या का सामना न करना पड़े। ऐसे स्थान पर छात्र अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है। आधिकांश मकान मालिकों के द्वारा छात्र के खान-पान पर सख्ती के साथ प्रतिबन्ध लगाया जाता है, और मजबूर किया जाता है की वह इस तरह का कुछ न पकाए जिससे किसी को समस्या हो। बहिष्कार, पृथक्करण और भेदभाव के नए रूप जिन्हें बहुत सूक्ष्म और अनदेखा माना जाता है भारत के प्रमुख शैक्षिक केंद्रों में विभिन्न पृष्ठभूमि और पहचान वाले छात्रों के बीच रहने की व्यवस्था और सामाजिक संबंधों की आधारशिला को रेखांकित करते हैं, प्रयागराज इसका अपवाद नहीं है । प्रवासी छात्र जब प्रयागराज में अध्ययन करने के लिए आते हैं तो उसके सामने सर्वप्रथम स्थिरता तथा आवास की समस्या आती है। क्षेत्रकार्य के दौरान उत्तरदाताओं ने बताया कि जब वह रहने के लिए किराये के कमरे खोजने जाते हैं तो उनको जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। यह भेद-भाव पढ़े-लिखे और कम पढ़े-लिखे दोनों मकान मालिकों के द्वारा किया जाता है। आधिकांश छात्र जो प्रयागराज में अध्ययन करने आते हैं, उनकी आर्थिक पृष्टभूमि कमजोर होती है जिसके कारण सीमित पैसों में ही महीने के खर्च को चलाना पड़ता है।

धर्म और जाति के आधार पर विभिन्नता में एकता की कमी

उत्तरदाता ने बताया कि- *"मेरे बड़े भाई अंबेडकर लाज मे रहते थे, इसके बाद मै भी पढ़ने के लिए इसी लाज मे आया। इस क्षेत्र में ज्यादातर अनुसूचित जाति के लोगों का मकान है, अंबेडकर जयंती पर हम सभी लाज वाले आपस में मिल कर उत्सव मनाते हैं और मिठाई बांटते है, यह क्षेत्र हमे काफी सुरक्षित महसूस होता है" । (प्रतियोगी छात्र,उम्र 24 साल)*

"मैंने जब यहाँ पर कमरा लिया तो पढ़ने का माहौल अच्छा था लेकिन आस पास कमरा के स्टूडेंट खाने में सूअर का मांस बनाते थे जो मुझे देखना भी पसंद नहीं था इसलिए मैंने रूम छोड़ दिया, मैं फिर ऐसी जगह रूम की तलास करने लगा जहाँ हमारी नृजातीयता के लोग रह रहे हो कुछ दिन मैंने ऐसे क्षेत्र में कमरा खोजा और मुझे मिला भी। अब मैं वही पर रहता हूँ। कुछ दिन रहने के बाद IAS की तैयारी करने के लिए दिल्ली जाने वाला हूँ।" (प्रतियोगी छात्र,उम्र 28 साल)

"मै कुछ दिनों तक एक छात्र के साथ रूम साझा करके रहा लेकिन कुछ विचारधारा को लेकर आपस मे विचार नहीं मिले जिसकी वजह से मैंने अकेले रहने का निर्णय लिया और अब मै अकेला रहता हूँ।" (प्रतियोगी छात्र,उम्र 26 साल)

यह अंतर्दृष्टि और व्यक्तिगत आख्यान एक स्पष्ट जातीय पड़ोस का निर्माण और समेकन करते हैं, जहां छात्र उन इलाकों में रहने के लिए आकर्षित होते हैं या मजबूर होते हैं, जहां उनकी आदिम पहचान का दावा किया जाता है। हमारा मानना है कि ये जातीय पहचान शहरी वातावरण में फिर से स्थापित होती है, जिसे अन्यथा ऐसे स्थान माना जाता था जहां जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर भेदभाव को अस्वीकार किया जाता है। अन्य चुनौती और समस्या परिवेश की भी होती है, जहाँ पर छात्र-छात्राओं के द्वारा कमरा लिया गया है वहाँ का माहौल कैसा है किस जाति और धर्म के छात्र ज्यादा रहते हैं क्योंकि प्रयागराज में अलग-अलग क्षेत्र में कुछ जाति और धर्म की संख्या ज्यादा पाई जाती है और छात्र-छात्राएं उसी जगह पर रहना ज्यादा पसंद करते हैं जहां पर उन्हे सुरक्षा महसूस होती है, जिस जगह अपनी संस्कृति, खानपान और धर्म का पालन कर सकें और एकजुट होकर अपनी सामूहिक चेतना की भावना को प्रकट कर सकें। कभी आप जिसके साथ कमरा में रह रहे हैं उसका व्यवहार अच्छा नहीं होता है या फिर कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिसमें विचार नहीं मिलते इसके कारण आपस मे ही संघर्ष रहता है जिससे समायोजन बैठाने मे समस्या आती है।

जागरूकता और दिशा निर्देश की कमी के कारण लक्ष्य निर्धारण में चुनौतियाँ

उत्तरदाता ने बताया कि- *"घर से कुछ दूरी पर स्थित महाविद्यालय से कक्षा 12 पास कर के दिल्ली यूनिवर्सिटी में मेरिट के आधार पर B.SC लाइफ साइंस में मेरा नामांकन (enrollment) 2015, हुआ इस कोर्स के बारे मे मुझे कोई जानकारी नहीं थी, सीट खाली थी तो प्रवेश मिल गया अर्द्ध वार्षिक परीक्षा हुई जिसमे मैं असफल(fail) हो गया फिर मुझसे लगा कि नहीं हो पाएगा और मैंने छोड़ने का निर्णय लिया। साल 2015 के आखिरी माह मे मैं प्रयागराज आ गया और फिर से बी.ए मे प्रवेश लिया, मुझे कौन सा विषय लेना है ये भी नहीं पता था। मैं जिस लॉज में रहता था एक सीनियर छात्र रहते थे उन्होंने मुझसे कौन सा विषय लेना है उसके बारे में बताया, बी.ए करने के बाद एम.ए किया साथ में एस.एस. सी (staff selection commission) के माध्यम से जो भर्ती आती थी उसकी भी तैयारी करता था। एम.ए के दौरान ही एक* सहायक आचार्य ने *सलाह दिया की "नेट" (नेशनल टेस्टिंग एजेंसी) की तैयारी से जे.आर. एफ पास करो जिससे पी.एच.डी मे प्रवेश मिल जाएगा और फेलोशिप भी* मिलेगी *जिससे आर्थिक मजबूती और परिवार पर दबाव कम होगा, साथ मे कोई भी परीक्षा देते रहना।" (शोध छात्र, उम्र 27 साल)।*

*मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए और एम.ए किया हूँ और गाँव के विद्यालय से बी.टी.*सी (*Basic Training Certificate) अब परिवर्तित नाम डी.एल. एड. (Diploma in elementary education) भी किया हूँ, और मेरा बी.एड (Bachelor of Education)* अभी *चल रहा है पर नौकरी की उम्मीद अभी भी नहीं लग रही है। पारिवारिक दबाव के साथ ही शादी का दबाव भी आ रहा है। घर मे सबसे बड़ा होने के कारण बहुत सारी जिम्मेदारियाँ भी आ रही है। मैंने घर वालों से बोल दिया है एक साल और देखूँगा नहीं तो फिर घर वापस चला जाऊंगा।" (प्रतियोगी छात्र, उम्र 25 साल)*

अधिकांश छात्रों के पास दिशानिर्देश की समस्या होती है। गाँव से पढ़ने का सपना लिए प्रयागराज आए छात्रों का साल इस तरीके से गुजरता है कि उन्हे पता भी नहीं लगता, क्यूंकि छात्र ऐसे परिवेश से आते हैं जहां पर पढ़ाई का स्तर बहुत निम्न होता है और परिवार में बहुत कम ही लोग होते हैं जो शिक्षा ग्रहण किए होते हैं या फिर तेजी से बदलते दौर की जरूरतों को परिवार और स्वयं छात्र-छात्राएं समझ ही नहीं पाते हैं। परिवार, पास-पड़ोस के गाँव से पढ़ने गए छात्र-छात्राओं को देख कर अपने बच्चे को पढ़ने के लिए भेजते हैं। उनको कौन सी परीक्षा की तैयारी करनी है, किस विषय मे नामांकन करना है, कुछ नहीं पता होता है पूर्ण जानकारी का अभाव होता है। जब छात्र प्रयागराज आता है तो वह समझ ही नहीं पाता है की उसे करना क्या है। कम ही छात्र होते जो कोई लक्ष्य लेकर आते हैं। लक्ष्य की कमी होने के कारण छात्र अलग अलग परीक्षा की तैयारी करता रहता है। कोई सीनियर किसी परीक्षा के बारे में बता देता है तो उसी की तैयारी करने लगता है उसके पास एक अच्छे दिशा निर्देश का शुरू से अभाव होता है, साथ ही साथ प्रेरणा की कमी होती है। एक अच्छा दिशानिर्देश न होने की वजह से ये छात्र एक धारा से दूसरी धारा में आसानी से गमन करते रहते हैं जिसमे समय का अधिक नुकसान हो जाता है। छात्र की समय के साथ नौकरी न लगने की वजह से तनाव, चिंता आदि मानसिक बीमारी के शिकार हो जाते हैं।

स्थिति और चुनौतियाँ

जब विद्यार्थी प्रयागराज में पढ़ने के लिए आते हैं तो उनके अपने कई चीजों को लेकर विचार होते है जिसके चलते कभी कभी समावेशन की प्रक्रिया में समस्या का सामना करना पड़ता है। समाजशास्त्रीय सन्दर्भ में समावेश, संघर्ष के बाद का अगला चरण होता है और ये भी जरूरी नहीं है की अगर समावेश हो गया है तो अब संघर्ष नहीं होगा। समावेशन दो समूह के बीच में एक समझौता होता है। उसी तरह छात्र कई तरह की समस्या का सामना करता है, जिसमें धर्म, लिंग,

संस्कृति, जाति, पहचान, आदि आते हैं, जिसकी वजह से समावेशन की प्रक्रिया मे समस्या आती है। प्रयागराज में विभिन्न धर्म के छात्र पढ़ने के लिए आते है, जिसमे, हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, क्रिश्चिन, सिख, जिनकी अलग अलग मान्यता और पहचान होती है। धर्म के आधार पर भी छात्रों के साथ भेद भाव देखने को मिलता है, यह भेद भाव चाहे मकान मालिक से हो या फिर छात्रों के बीच, जिससे समावेशन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जाति के आधार पर भी समावेशन में समस्या होती है। अनेक जाति समूह के छात्र प्रयागराज में पढ़ते हैं और यह देखने को मिलता है की छात्र-छात्राएं अकसर अपना मित्र अपने जाति समूह के लोगों में बनाने की कोशिश करते है जिससे उनको सुरक्षा महसूस होती है। दूसरी बात वह कमरा भी उसी स्थान पर लेने की कोशिश करते हैं जहाँ पर जाति समूह साथी मित्र रहते है या उसके जाति समूह के लोग ज्यादा होते हैं उसमें एकता की भावना पाई जाती है। लिंग(Gender) के आधार पर समावेशन की प्रक्रिया में चुनौतियाँ आती हैं, जिसमें ज्यादातर छात्राएं समस्या का सामना करती हैं। जब वे प्रयागराज पढ़ने के लिए आती हैं तो पहली समस्या रहने की होती हैं। वे ज्यादातर छात्रावास में रहने का प्रयास करती हैं। उस छात्रावास में मकान मालिक के द्वारा प्रतिबन्ध भी होते हैं जो लड़कों के छात्रावास में ज्यादातर नहीं देखने को मिलते हैं। ऐसा प्रतिबन्ध लिंग के आधार पर देखने को मिलता है। प्रयागराज में विभिन्न धर्म और संस्कृति को मानने वाले छात्र और छात्राएं पढ़ने के लिए आते हैं। जिनके विश्वास और उनका समाजीकरण उनकी संस्कृति और धर्म के अनुसार हुआ होता है, *समनर* ने अपनी पुस्तक *फोकवेज (*1906) के अनुसार " हर संस्कृति और धर्म अपने आप में अच्छा होता है उनकी अपनी विशेषता और अच्छाई होती है हमे सभी धर्म और समुदाय का सम्मान करना चाहिए ." जिसको उन्होंने नृजातिकेन्द्रीयता कहा था।

आकड़ों का विश्लेषण: गूगल फॉर्म (साक्षात्कार अनुसूची) का प्रयोग

यह विश्लेषण 100 छात्र और छात्राओं से साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण है। प्रवासी विद्यार्थीयों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक पृष्टभूमि पर आधारित है।

आर्थिक स्थिति: ग्राफ- 1

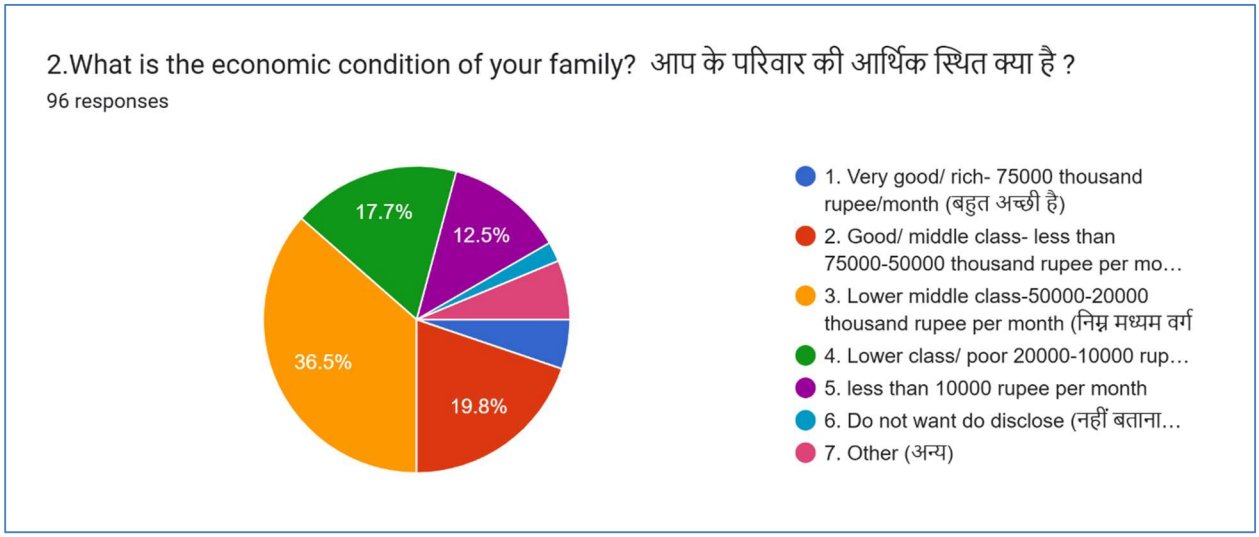

प्रस्तुत आकड़ों में 100 उत्तरदाताओं में से 96 उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया है, आकड़ों से प्रदर्शित होता है की सबसे ज्यादा (36.5%) उत्तरदाता निम्न मध्यम वर्ग से आते हैं, जबकि (19.8%) उत्तरदाता अच्छे या मध्यम वर्ग से आते हैं। (17. 7%) निम्न वर्ग से आते हैं। (12.5%) उत्तरदाता उस वर्ग से आते हैं जिनके परिवार की आय बहुत कम है। आकड़ों से

प्रदर्शित होता की अधिकांश प्रतियोगी निम्न माध्यम वर्ग से आते हैं जिनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण ज्यादा समय तक तैयारी नहीं कर पाते हैं, और घर वापस लौटना पड़ता है, जैसा की *पियरे बौर्डियू* ने अपनी पुस्तक रिप्रोडक्शन इन एजुकेशन सोसाइटी एंड कल्चर; (1977) में बताया है कि "*सांस्कृतिक पुनरुत्पादन में जो लोग आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से मजबूत होते है वे लोग उच्च शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़ जाते है और अपनी संस्कृति को भी आगे बढ़ाते हैं। लेकिन जिसके पास सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रतीकात्मक और आर्थिक पूंजी की कमी होती है वे लोग पीछे रह जाते हैं और अपनी संस्कृति को आगे नही बढ़ा पाते हैं जिसके कारण शिक्षा से अलग हो जाते हैं।*"

सामाजिक श्रेणी: ग्राफ- 2

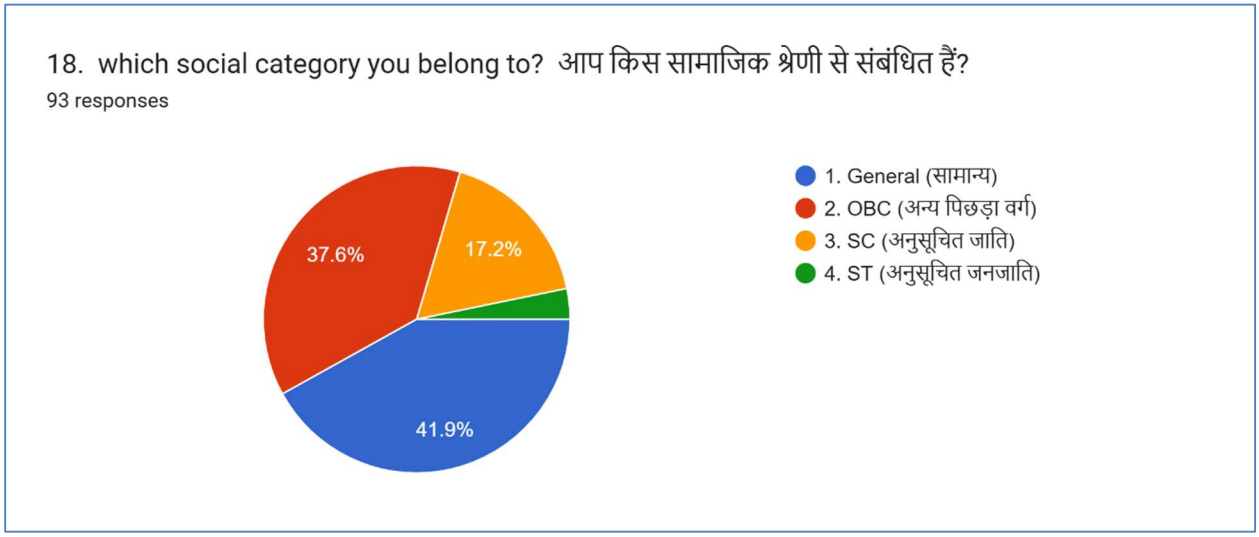

प्रस्तुत आकड़ों में 93 उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया है। जिसमें 39 (41.9%) सामान्य श्रेणी, 35 (37.6%) अन्य पिछड़ा वर्ग, 16 (17.2%) अनुसूचित जाति तथा तीन (3.2%) अनुसूचित जनजाति से सम्बंधित हैं। प्रस्तुत आकड़ों में प्रदर्शित है कि अधिकांश प्रतियोगी सामान्य श्रेणी के हैं। उसके बाद अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति, सबसे कम अनुसूचित जनजाति की श्रेणी से आते हैं।

शैक्षिक स्थिति: ग्राफ- 3

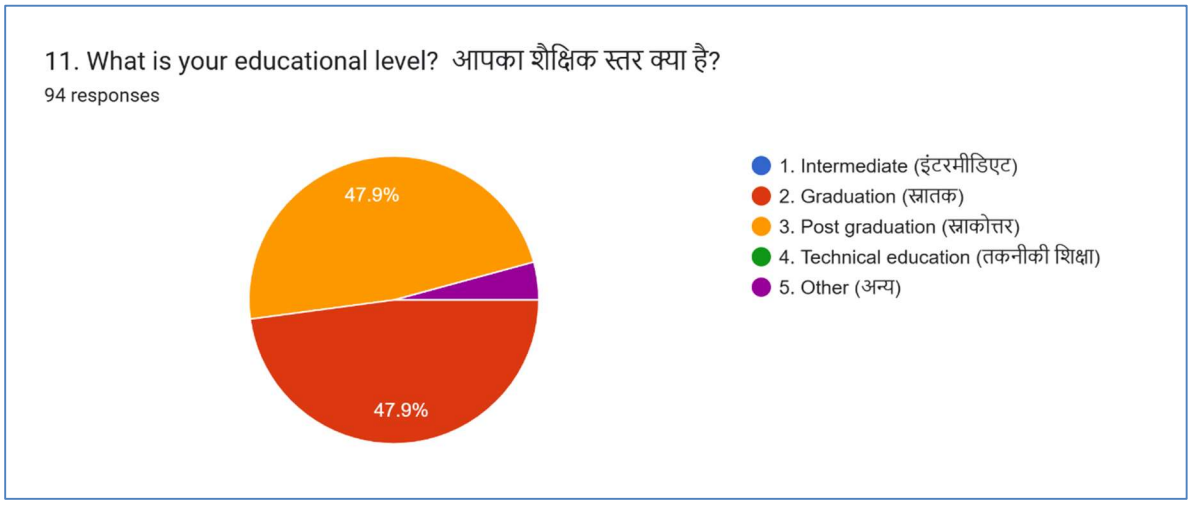

प्रस्तुत आकड़ों में 45 उत्तरदाता लगभग (47.9%) प्रतिशत का शैक्षिक स्तर परास्नातक तथा 45 प्रतिशत लगभग (47.9) प्रतिशत ने स्नातक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की हुई है। चार उत्तरदाता लगभग (4.3 %) प्रतिशत ने अन्य स्तर जैसे, डिप्लोमा, तकनीकी जैसी डिग्री प्राप्त कर रखी है। अर्थात आकड़ों से यह पता चल रहा है कि अधिकतर छात्र-छात्राएं स्नातक और परास्नातक की शिक्षा प्राप्त कर नौकरी की तलास में प्रयागराज में अध्ययनरत है।

अन्य शहरों में पढ़ाई: ग्राफ- 4

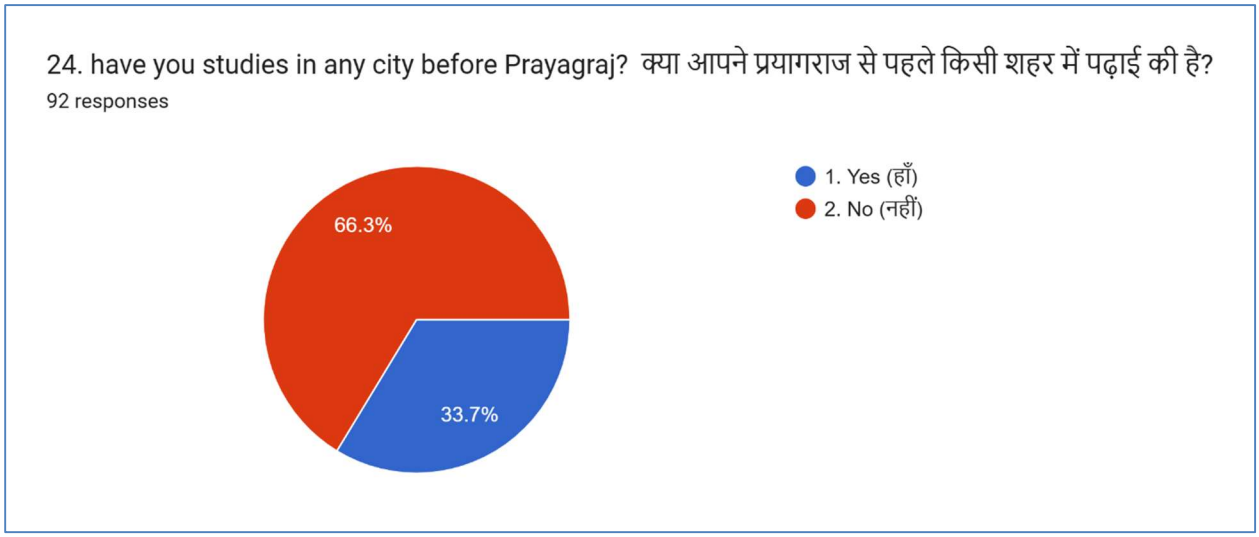

प्रस्तुत आकड़ों में से 61(66.3%) उत्तरदाता ने बताया कि किसी अन्य शहर में पढ़ाई के लिए प्रवास नही किये हैं, पढ़ाई के लिए पहला गंतव्य प्रयागराज ही चुना, जबकि 31 उत्तरदाता लगभग (33.7%) ने "हाँ" में उत्तर दिया है कि प्रयागराज से पहले अन्य शहर में पढ़ने के लिए प्रवास किए हैं। उत्तर दाता से पता चला की अन्य शहरों में पढ़ने के पीछे कई कारण थे जिसमें से पहला कारण अकादमिक शिक्षा के लिए प्रवास किये शिक्षा पूरी करने के बाद प्रतियोगिता के लिए प्रयागराज आ गए।

क्यू 24 (a) किस शहर में प्रवास किया? कुछ प्रवासी छात्र प्रयागराज में पढ़ाई के लिए प्रवास करने से पहले अन्य शहरों में प्रवास किये जैसे, दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी, पटना, कानपुर, अयोध्या आदि।

शहर छोड़ने का कारण: ग्राफ- 5

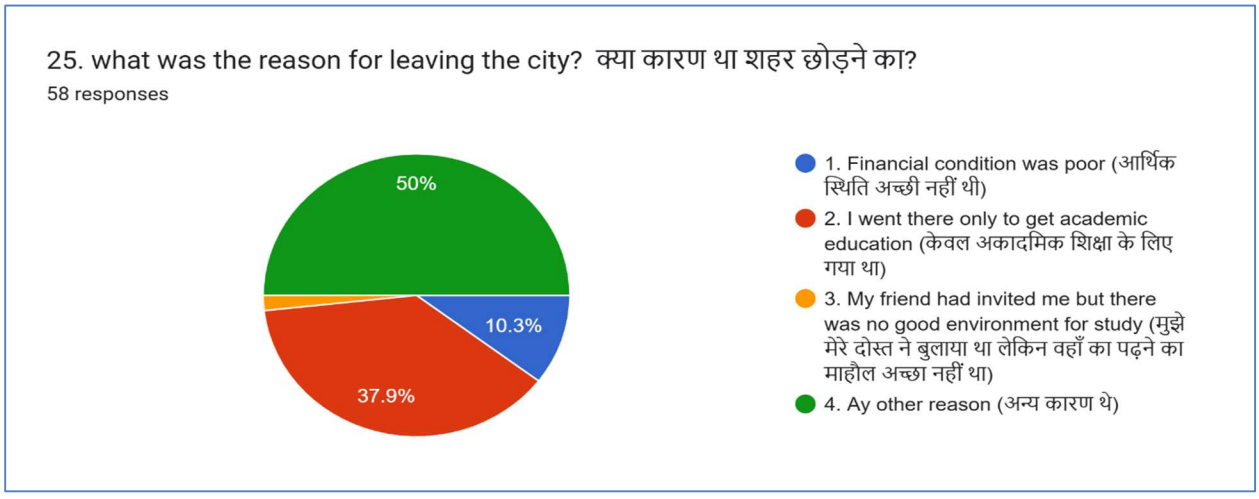

इन शहरों को छोड़ने का छात्रों के पास अलग अलग कारण थे। आकड़ों के अनुसार लगभग (50%) उत्तरदाता ने शहर छोड़ने का "अन्य कारण बताया।" (37.9%) उत्तरदाता ने बताया कि वे केवल अकादमिक शिक्षा के लिए अन्य शहर में प्रवास किए थे, अकादमिक शिक्षा पूरी होने के बाद प्रयागराज सरकारी नौकरी की तैयारी करने आ गए जबकि (10.3%) उत्तरदाता ने बताया की "परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण प्रयागराज आना पड़ा, (1.7%) उत्तरदाता ने बताया की "दोस्तों ने बुलाया था लेकिन पढ़ने का माहौल न होने की वजह से प्रयागराज आना सही समझा, इसलिए प्रयागराज पढ़ने के लिए आ गया।

धार्मिक प्रस्थिति: ग्राफ- 6

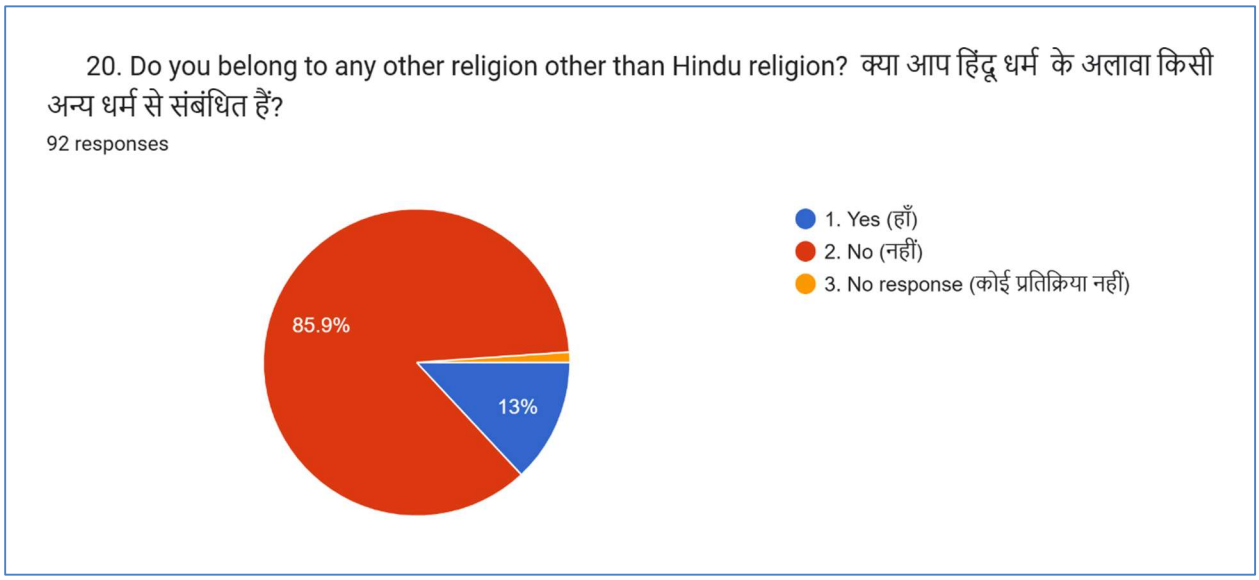

प्रस्तुत आकड़ो में 100 उत्तदाताओं में से 92 ने अपनी धार्मिक पहचान बताया है। जिसमें 79 (85.9%) हिन्दू धर्म से सम्बंधित है, बारह लगभग (13%) अन्य धर्म से सम्बंधित हैं, जबकि एक (1.1%) ने कोई प्रतिक्रिया नही दी है। *प्रश्न संख्या 20a* प्रस्तुत आकड़ों में 100 में से 26 उत्तरदाता ने उत्तर प्रतिक्रिता दिया है. जिसमें 20 (76.9%) अन्य धर्म, छः (23.1 %) मुस्लिम धर्म से सम्बंधित हैं।

शैक्षिक लक्ष्य: ग्राफ- 7

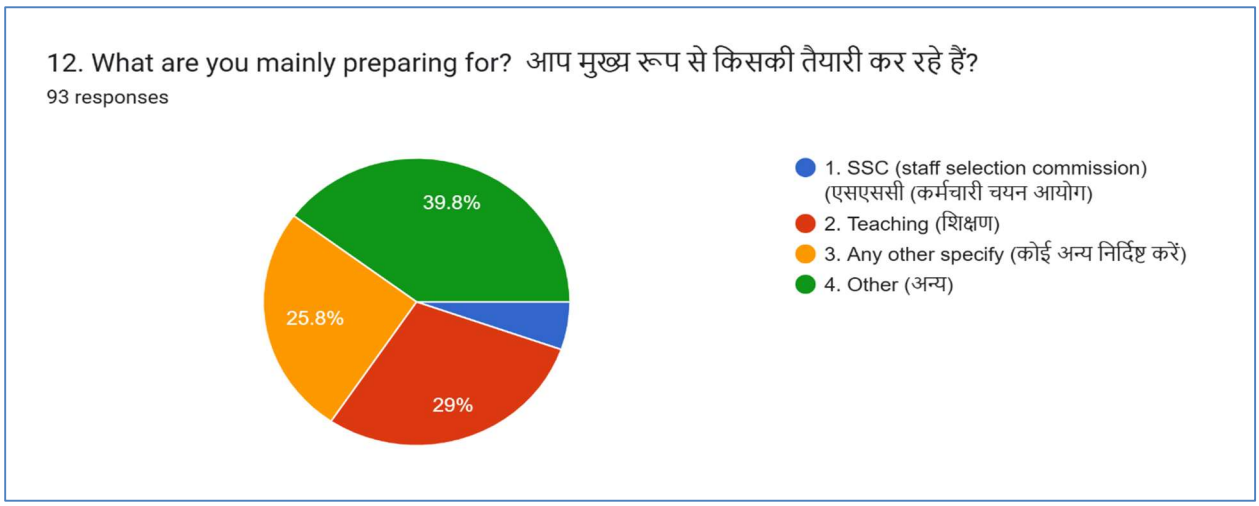

प्रस्तुत आकड़ों में अधिकतम 37 लगभग (39.8%) ने बताया की 'अन्य' चीज की तैयारी कर रहे हैं। जबकि 24 उत्तरदाता लगभग (25.8%) ने बताया कि शिक्षण और कर्मचारी चयन आयोग के अलावा कोई दूसरी तैयारी कर रहे हैं। 27 उत्तरदाता लगभग (29%) शिक्षण के क्षेत्र की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं. सबसे कम पांच उत्तरदाता लगभग (5.4%) कर्मचारी चयन आयोग की तैयारी प्रयागराज में रह कर कर रहे हैं। अतः आकड़ों से यह प्रदर्शित हो रहा है कि अधिकतम उत्तरदाता गैर-तकनीकी क्षेत्र से सम्बंधित होते हैं, जिसके कारण सरकारी नौकरी पर निर्भरता अधिक होती है। कोई ऐसा कौशल भी उनके पास नहीं होता है जिससे अपनी जीविका चला सके।

प्रवासी छात्र-छात्राओं में जातिगत भेदभाव: ग्राफ- 8, 9

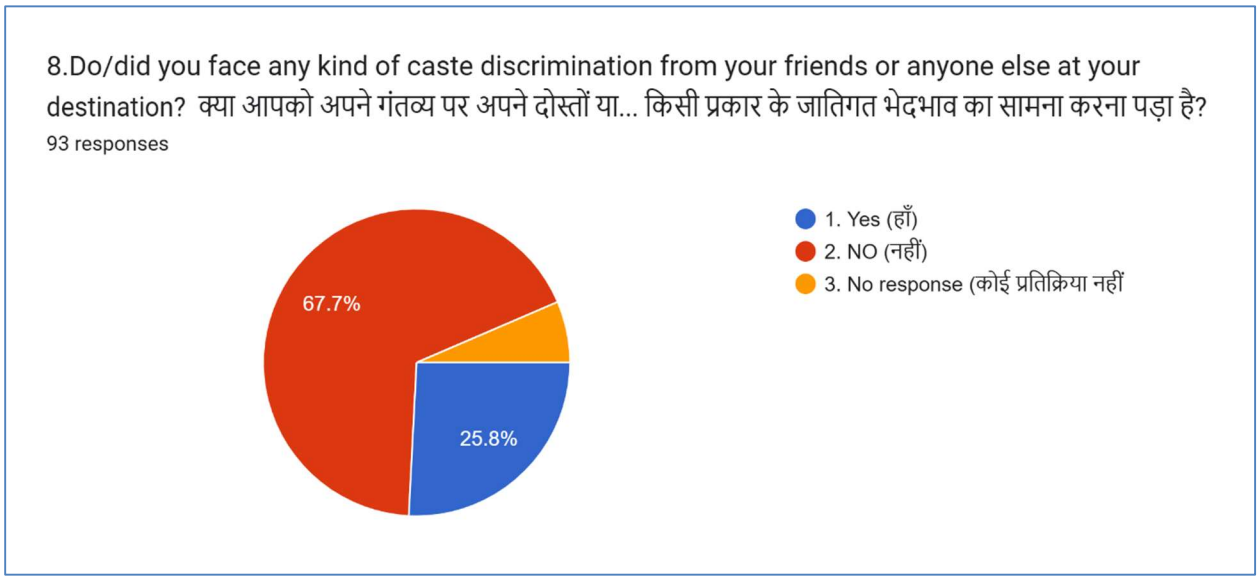

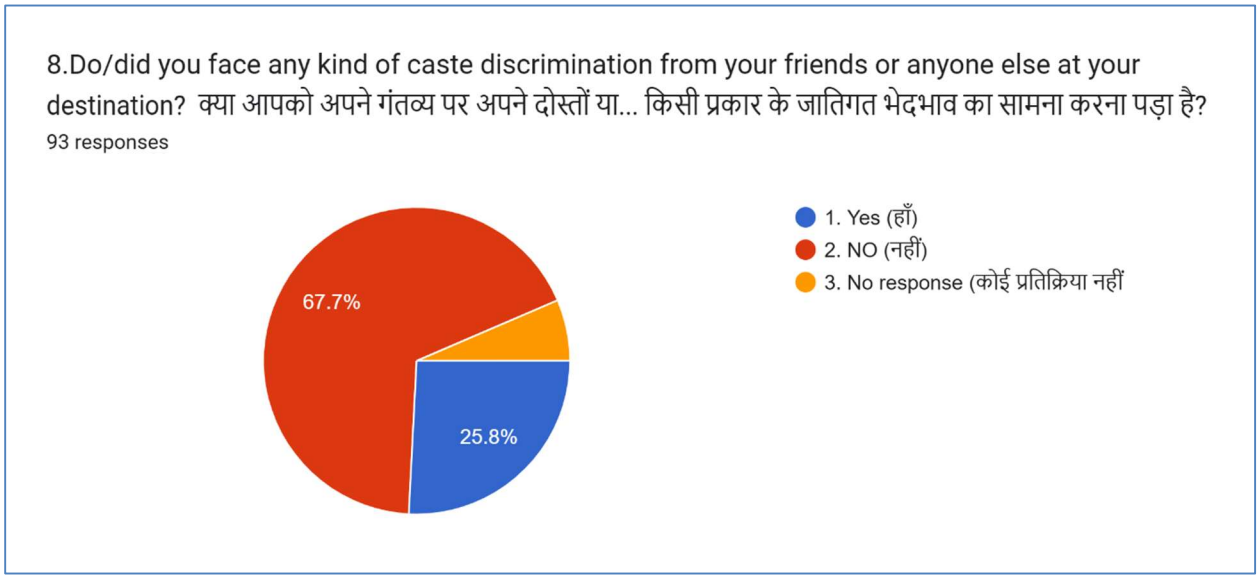

प्रस्तुत आकड़ों में 63 लगभग (67.7%) उत्तरदाता ने बताया कि अपने गंतव्य पर अपने दोस्तों या किसी अन्य व्यक्ति से किसी प्रकार के जातिगत भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा, जबकि, 24 लगभग (25.8%) उत्तरदाता ने "हाँ" में उत्तर दिया जिनके साथ दोस्तों या अन्य व्यक्ति के द्वारा जातिगत भेदभाव किया गया आकड़ों से पता चलता है की ये

ऐसे उत्तरदाता है जो अनुसूचित जाति, जनजाति और कुछ अन्य पिछड़ा वर्ग से आते हैं, तथा 6 उत्तरदाता लगभग (6.5 %) उत्तरदाता ने किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

कमरा खोजने के दौरान जातिगत भेदभाव का विश्लेषण: ग्राफ-10

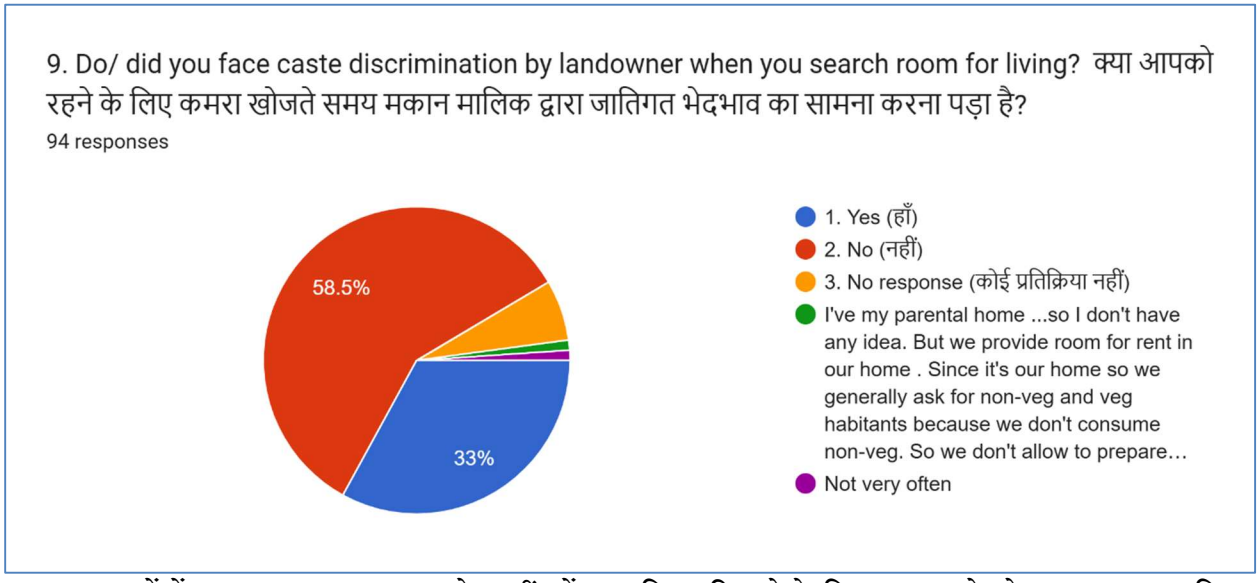

प्रस्तुत आकड़ों में 55 (58.5%) उत्तरदाता ने "नहीं" में उत्तर दिया की रहने के लिए कमरा खोजते समय मकान मालिक के द्वारा किसी तरह का भेदभाव नही किया गया है, जबकि 31 उत्तरदाता लगभग (33%) ने "हाँ" में उत्तर दिया है की उनके साथ जातिगत भेद भाव किया गया है। जाति का नाम पूछ कर कमरा देने से मना कर दिया गया, आकड़ों से पता चलता है कि उसी उत्तरदाता के साथ भेदभाव किया गया जो अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और कुछ अन्य पिछड़ा वर्ग से सम्बंधित हैं, 8 उत्तरदाता लगभग (8.6 %) जिन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया है, आकड़े से प्रदर्शित है की आज भी जाति के आधार पर भेद-भाव देखने को मिल रहा है।

एक जाति समूह के साथ मित्रता की भावना : ग्राफ- 11

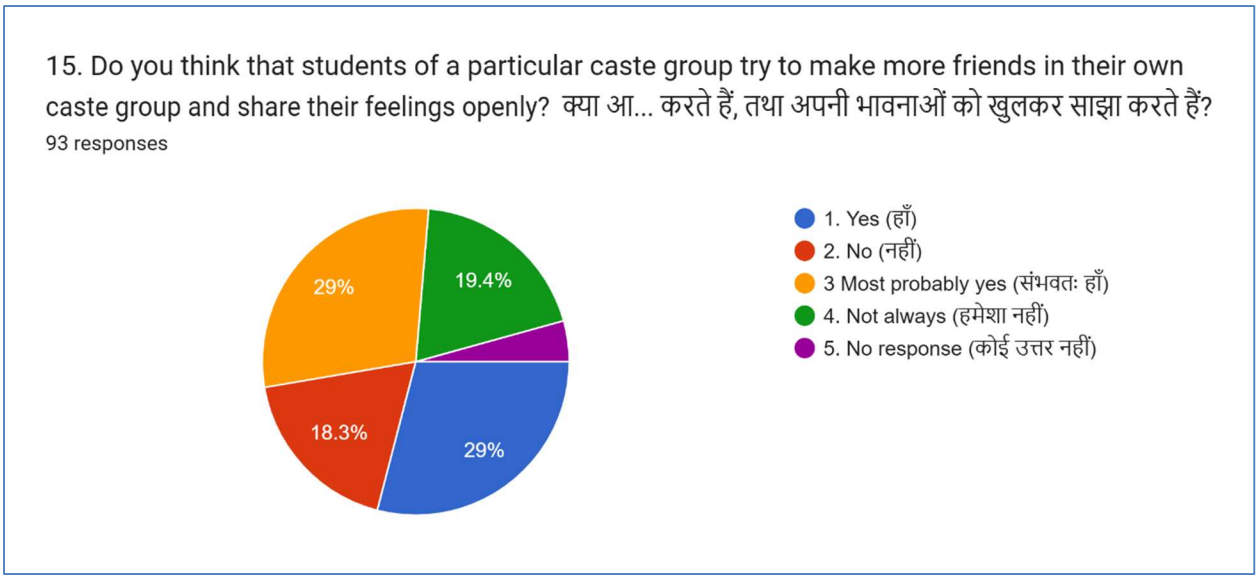

प्रस्तुत आकड़ों में 27 उत्तरदाता लगभग (29%) ने "हाँ" में उत्तर दिया है कि एक ही जाति समूह के छात्र-छात्राएँ अपने ही जाति समूह में मित्र बनाने की कोशिश करते हैं। इसके साथ ही इनके बीच अपनी भावनाओं को अन्तःक्रिया के माध्यम से साझा करने की प्रवृति अधिक होती है। जबकि 27 लगभग (29%) "संभवता हाँ" में उत्तर दिया है। 18 उत्तरदाता लगभग (19.4%) ने उत्तर दिया कि "हमेशा नहीं होता है" इसका मतलब होता है लेकिन कभी कभी, इसी प्रकार 4 उत्तरदाता (4.3%) ने कोई उत्तर नहीं दिया है, एक ही जाति समूह के छात्रों में एक एकजुटता की भावना सदस्यों के बीच सामाजिक सामंजस्य, अपने पन की साझा भावना, एक सहायक, सहकारी और सुरक्षा की प्रवृति को बढ़ावा देते हैं।

एक जाति,धर्म के लोगों के साथ मित्रता के अवसर: ग्राफ- 12

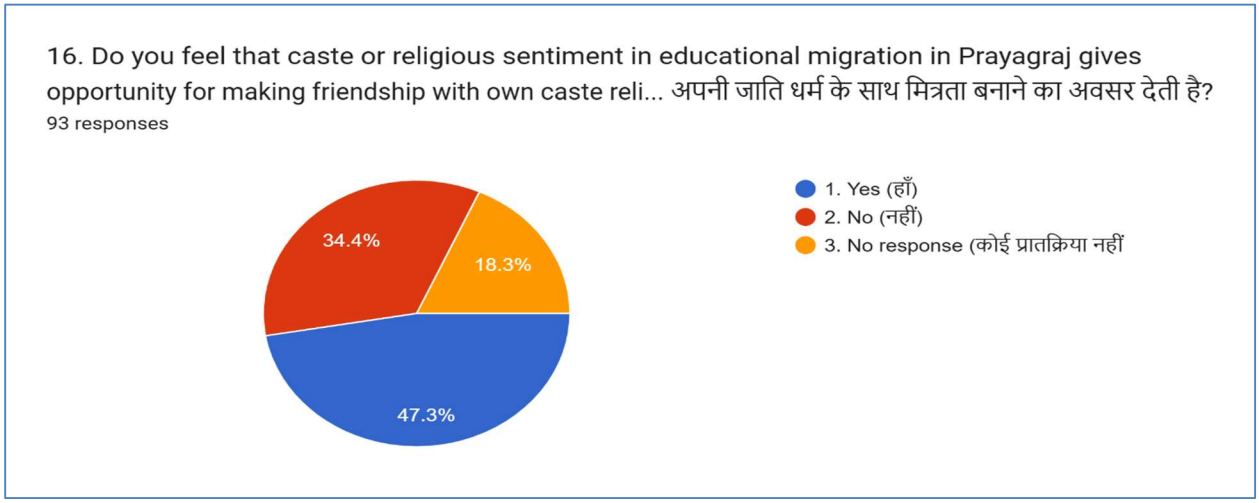

प्रस्तुत आकड़ों में 44 लगभग (47.3 %) उत्तरदाता ने "हाँ" में उत्तर दिया है कि प्रयागराज में शैक्षिक प्रवास में जाति या धार्मिक भावना, अपनी जाति धर्म के लोगों के साथ मित्रता बनाने का अवसर देती है, जबकि 32 लगभग (34.4%) उत्तरदाता ने "नहीं" में उत्तर दिया है, लगभग (18.3%) उत्तरदाता ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। आकड़ों से प्रदर्शित होता है कि एक जाति, धर्म के प्रतियोगियों में मित्रता के अवसर ज्यादा देखे जा सकते है। इससे यह स्पष्ट होता है 'हम की भावना' गंतव्य स्थल पर मित्रता के अवसर खोलते हैं।

निवास स्थान पर जातिगत और धार्मिक भेदभाव: ग्राफ- 13

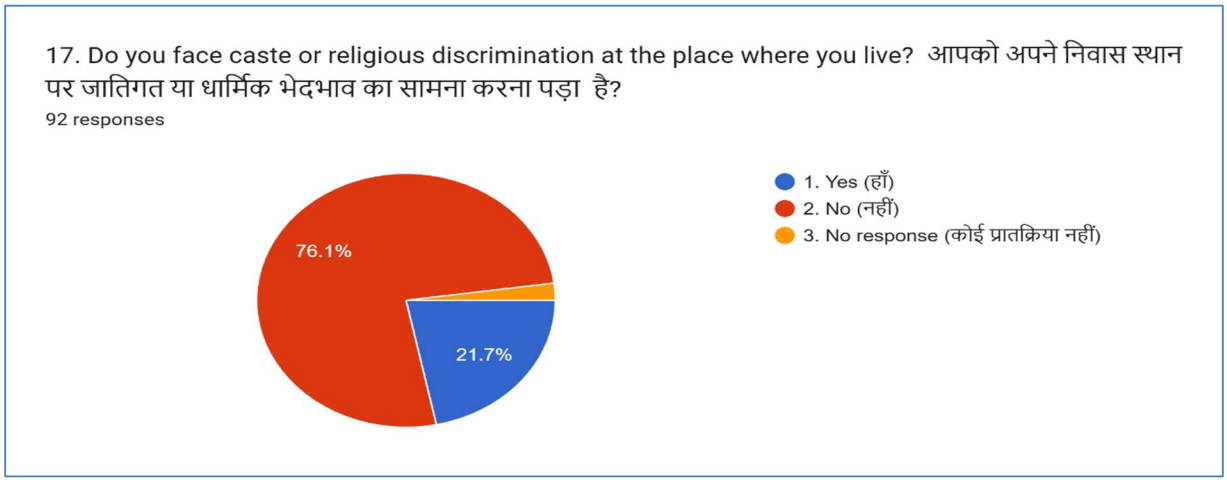

प्रस्तुत आकड़ों में 100 उत्तरदाताओं में से 92 उत्तरदाताओं ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, जिसमें (76.1 %) ने "नहीं" में उत्तर दिया है, जबकि (21.7%) ने "हाँ" में उत्तर दिया है जिन्होंने ने अपने निवास स्थान पर जातिगत या धार्मिक भेदभाव का सामना करना पड़ा है।

प्रस्तुत प्रश्न 17(अ), खुली प्रश्न प्रकृति का है. इस प्रश्न का उत्तर 100 उत्तरदाताओं में से केवल 46 उत्तरदाताओं ने ही दिया है. तीन उत्तरदाता ने बता की जहाँ हम कमरा लेकर रहते है वहां किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता है। परन्तु 43 उत्तरदाता ने निम्नलिखित भेदभाव का उल्लेख किया है। उत्तरदाताओं ने बताया कि भेदभाव किसी व्यक्ति या समूह का उसकी विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर होता है जैसे जाति, धर्म, लिंग, तथा विकलांगता आदि, कुछ उत्तरदाता ने विशेष जाति समूह को जिम्मेदार बताया है। कुछ उत्तरदाता ने बताया कि हिन्दू-मुस्लिम के आधार पर भेदभाद किया जाता है, कुछ ने बताया कि नाम और जाति पूछ कर नीचा दिखाने की कोशिश की जाती है, कुछ उत्तरदाता ने बताया की उच्च जाति के लोगों का निम्न जाति के लोगों को देखने का दृष्टिकोण अलग है, जैसे-शिक्षा के क्षेत्र में अगर निम्न जाति का कोई छात्र आगे है तो कहा जाता है आरक्षण के आधार पर यहाँ तक पंहुचा है अर्थात इसके अन्दर कोई काबिलियत नहीं है, वर्ग के आधार पर भी भेदभाव देखने को मिलता है।

भूमिका और जिम्मेदारी में परिवर्तन: ग्राफ-14

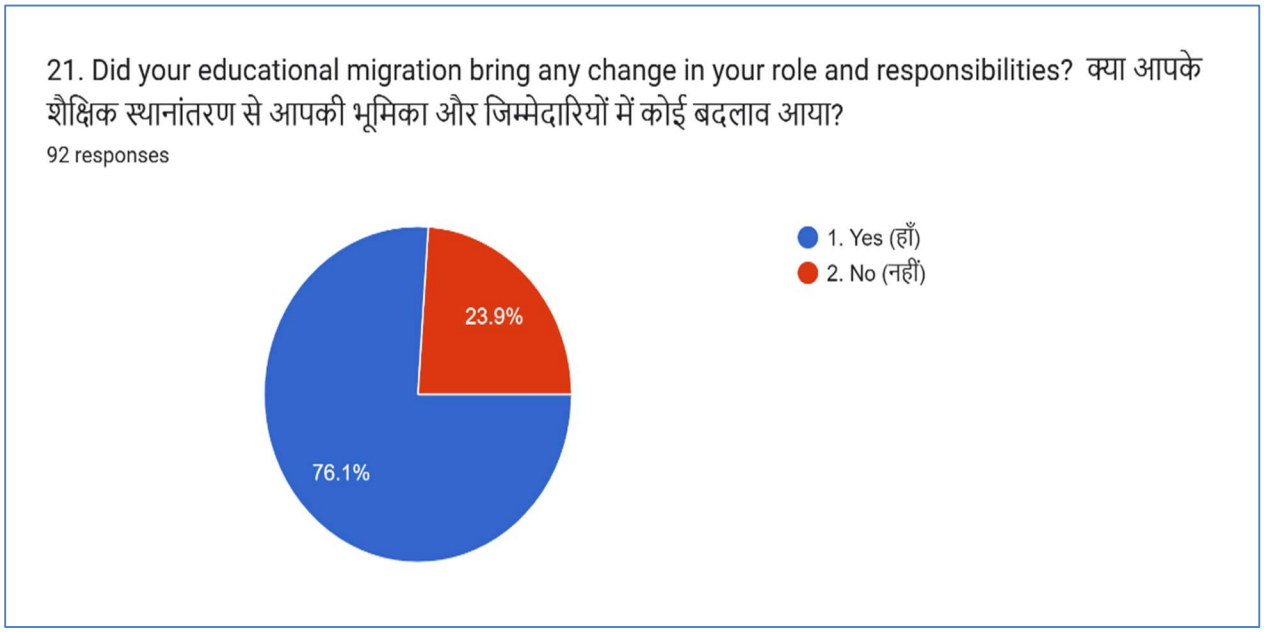

प्रस्तुत आकड़ों में (76.1%) उत्तरदाता ने उत्तर दिया कि शैक्षिक प्रवास से भूमिका और जिम्मेदारियों में बदलाव आया है, जबकि (23.9%) उत्तरदाता ने बताया की शैक्षिक प्रवास से ऐसा कोई बदलाव नहीं आया है अर्थात (23.9 %) उत्तरदाता ने "नहीं" में उत्तर दिया है। प्रस्तुत प्रश्न खुली प्रकृति का है। इस प्रश्न का उत्तर 100 उत्तरदाता में से केवल 56 उत्तरदाता ने दिया है। कुछ उत्तरदाता ने बताया की शैक्षिक प्रवास से घर और परिवार के प्रति जिम्मेदारी का अहसास हुआ जिससे अपने घर और परिवार के प्रति भूमिका निभाने में और सक्रिय हुआ। व्यक्तित्व का विकास और आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सामाजिक प्रस्थिति में बदलाव हुआ है साथ ही पढ़ाई के लिए आत्मनिर्भर हुए हैं। शैक्षिक प्रवास से समाज, समुदाय और तमाम ऐसी चीजों के बारे में अच्छी समझ पैदा हुई जिसके बारे में पहले मेरी समझ नहीं थी, शैक्षिक

प्रवास से किसी मुद्दे पर आलोचनात्मक चिंतन करने के कौशल विकसित हुए हैं इसके साथ ही बेहतर समझ और निर्णय लेने की दृष्टिकोण में बदलाव हुआ है।

शैक्षणिक प्रवास से समाज में स्थिति और सम्मान में परिवर्तन: ग्राफ-15

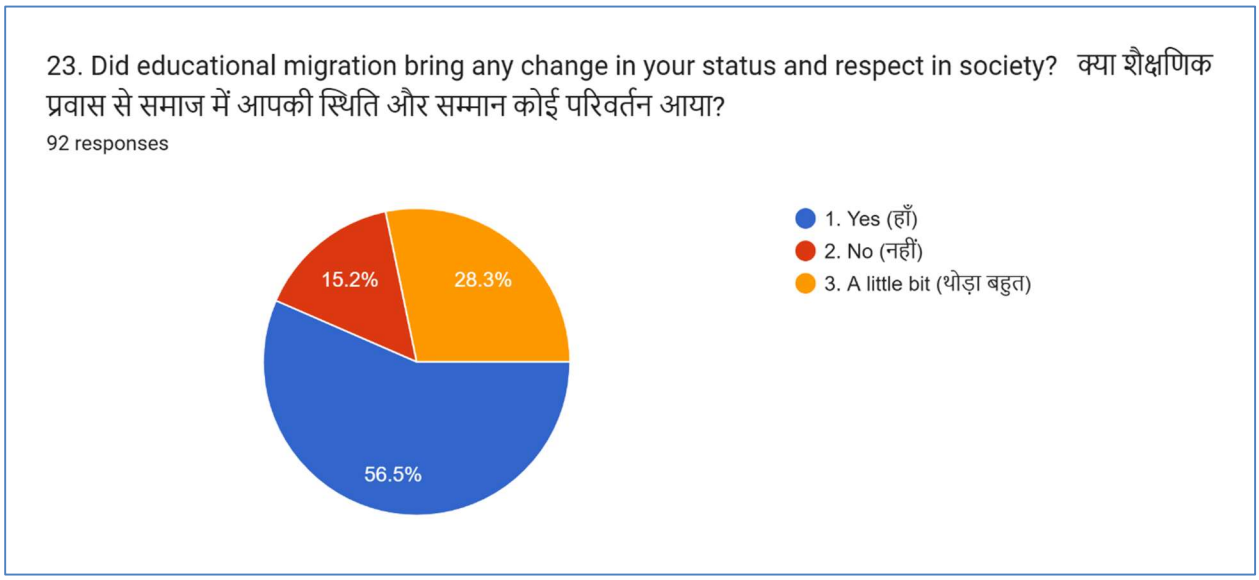

प्रस्तुत आकड़ों में (56.5 %) उत्तरदाता ने बताया की शैक्षिक प्रवास से समाज और समुदाय में प्रस्थिति और सम्मान में परिवर्तन देखे को मिलता है जबकि (15.2%) ने बताया की कोई परिवर्तन नहीं आता है अर्थात "नहीं" में उत्तर दिया है. (28.3 %) ने बताया की थोडा बहुत परिवर्तन देखने को मिलता है।

विश्लेषणात्मक विमर्श

समाज और समुदाय में आर्थिक गतिशीलता के लिए परिवार की छात्र से नौकरी की अपेक्षा

सबसे बड़ी समस्या छात्रों के सामने तनाव और चिंता की है जब एक छात्र पढ़ने के लिए आता है तो उसके साथ स्वयं की और परिवार की अपेक्षा भी आती हैं, उसके ऊपर नौकरी प्राप्त करके अपने परिवार को सामाजिक, आर्थिक प्रगति की ऊंचाई पर ले जाने का सपना होता है। मध्यम परिवार से होने के कारण सभी सदस्यों को पढ़ने का मौका नहीं मिल पाता है जिसको मिलता है उसके ऊपर बहुत सारी जिम्मेदारी होती है जिसको निर्वाह करने में चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज, समुदाय और नातेदारी में सम्मान प्राप्त करने ले लिए भी परिवार छात्र से अच्छे परिणाम और नौकरी की अपेक्षा करता है। कुछ छात्र इसमें सफल हो जाते हैं और कुछ अपेक्षा पर खरा नहीं उतरते, असफल छात्रो को समुदाय और समाज के ताने सुनने पड़ते हैं, आखिर में असफल छात्रों के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचता है इनके पास कोई कौशल भी नहीं होता है जिससे ये अपनी जीविका चला सके और घर की निर्भरता से स्वतंत्र हो जाएं आखिर में ये छात्र घर वापस चले जाते हैं और इनके सपने अधूरे ही रह जाते है।

छात्र प्रवास में समाजीकरण और सद्भावना

छात्र, प्रवास में गंतव्य स्थल पर समाजीकरण और एकीकरण की प्रक्रिया में अपनी संस्कृति, भाषा, रहन सहन और खानपान को लेकर समस्या और चुनौतियों का सामना करता है। प्रयागराज में आस पास के जिलों और गाँव से पढ़ने आए छात्र-छात्राओं को एक नई जगह के साथ रहन सहन में तालमेल स्थापित करने में समस्या का सामना करते हैं,

जिसमें कुछ चीजों को लेकर परिवर्तन भी आता है और समायोजन बनाने की कोशिश भी करते हैं। इस माहौल का युवा जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आधिकांश छात्र-छात्राएँ जिस परिवेश से आते हैं वहाँ जाति, धर्म, और नृजातिकेन्द्रीयता की प्रमुखता होती है । एक दूसरी जाति के यहाँ खानपान पर सामाजिक प्रतिबंध होता है, लेकिन जब युवा प्रवास कर प्रयागराज या किसी अन्य स्थान पर जाते हैं तो पुर्नसमाजीकरण के द्वारा बदलाव देखने को मिलता है। यहाँ तक कि एक कमरे में अलग जाति और धर्म के छात्र एक साथ रहते है, एक चूल्हे पर खाना बनाते हैं, साथ मे रहकर पढ़ाई करते है, अपनी समस्या को एक दूसरे से साझा भी करते आधिकांशतः छात्रों के बीच भेद-भाव देखने को नही मिलता है लेकिन कभी कभी खानपान को लेकर भेदभाव देखने को मिलता है जिसकी वजह से सहपाठी के बीच टकराव जैसी स्थिति उत्पन्न होती है, जिसके कारण कुछ छात्र-छात्राएं अलग रहना अच्छा विकल्प समझते हैं। पुर्नसमाजीकरण की प्रक्रिया में एक छात्र को गंतव्य स्थल पर अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश के लोगों से मिलने का अवसर मिलता है जिसका व्यवहार, संस्कृति और धर्म, रहन सहन अलग होता है उनसे छात्र बहुत सारी चीजें सीखता और अपने आप को उसी के अनुसार ढालने की कोशिश करता जो छात्र- छात्राओ को आगे एकीकरण करने मे मदद करता है।

प्रवास में छात्र स्थायित्व और गतिशीलता

प्रयागराज में युवा प्रवास के स्थायित्व में सबसे बड़ी भूमिका परिवार की आर्थिक पृष्टभूमि की होती है। यह परिवार पर निर्भर करता है की कितने समय तक रह कर तैयारी कर सकते हैं। प्रयागराज पढ़ने के लिए एक ऐसी जगह है जहाँ पर कम पैसे पर भी रह कर पढ़ाई की जा सकती है इसी वजह से हजारों छात्र-छात्राएं हर साल आते है । इनके बीच आकदमिक गतिशीलता देखने को मिलती है जिसमें छात्र-छात्राएं अलग अलग कोर्स मे प्रवेश ले कर अपनी अकादमिक स्थिति को मजबूत करता है इन्ही में से कुछ छात्र-छात्राएं ऐसे होते है जो अपने अकादमिक पढ़ाई प्रयागराज में पूरी करके आगे पढ़ने के लिए अन्य शहरों में चले जाते हैं। जब एक छात्र सफल होता है तो उसकी सामाजिक आर्थिक के साथ ही प्रस्थिति मे भी गतिशीलता देखने को मिलती है। गतिशीलता के सम्बन्ध में अगर छात्र-छात्राएं प्रवास को देखते हैं तो हमें उर्धवाधर गतिशीलता दिखाई देती है, जिसमें छात्र अपने उद्देश्य को लेकर एक गाँव से बाहर पढ़ने के लिए जाता है और उच्च शिक्षा और नौकरी के माध्यम से अपनी प्रस्थिति में वृद्धि करता है। साथ ही वह अपने परिवार में शिक्षा के मामले में सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा होता है। गतिशीलता के पीछे मुख्य उद्देश्य एक छात्र का पढ़ लिख कर नौकरी करना और अपने साथ साथ अपने परिवार और आने वाली पीढ़ी को एक अच्छी जीवन शैली के साथ सुख और समृद्धि प्रदान करना होता है। अपनी शिक्षा के दौरान वह जो वह जो समस्या और चुनौतियों का सामना किया होता है आने वाली पीढ़ी को उसका सामना न करना पड़े यह भी उसकी कोशिश होती है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन प्रयागराज को मात्र एक धार्मिक केंद्र के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक-शैक्षिक गतिशीलता के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में प्रस्तुत करता है। यहाँ आने वाले छात्रों की चुनौतियाँ न केवल व्यक्तिगत हैं, बल्कि समाज में जाति, धर्म, वर्ग, लिंग और अवसर के वितरण में निहित असमानताओं को भी दर्शाती हैं। यह ली के पुश-पुल कारक (Lee's Push-Pull Factors) के सैद्धांतिक ढांचा की पुष्टि करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे शैक्षिक संस्थानों की कमी (पुश कारक) छात्रों को प्रयागराज जैसे शहरी शैक्षिक केंद्रों की ओर खींचती है, जहाँ बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ और नौकरी की सम्भावना (पुल कारक) उपलब्ध हैं। जैसा कि आकड़ों से प्रदर्शित होता है कि, अधिकांश छात्र निम्न मध्यम वर्ग से प्रयागराज में पढ़ने के लिए आते हैं जिनके परिवार की आर्थिक स्थिति अधिकांशतःअच्छी नहीं होती है। आकड़ों से प्रदर्शित होता है

की छात्रों का प्रयागराज आने का मुख्य उद्देश्य अपने और परिवार की सभी आयामों से सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक गतिशीलता लाना है। प्रवास का मुख्य उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक प्रगति और परिवार के लिए ऊर्ध्वाधर गतिशीलता प्राप्त करना है। यह दिखाता है कि शिक्षा को सिर्फ ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि प्रस्थिति (Status) और सम्मान प्राप्त करने के साधन के रूप में देखा जाता है। ऐसा तभी संभव है जब छात्र नौकरी प्राप्त कर लें। जहाँ तक जाति, धर्म और भेदभाव की बात है (33% छात्रों ने मकान मालिक द्वारा भेदभाव का सामना किया) और व्यक्तिगत आख्यानों से स्पष्ट है कि किराए पर कमरे ढूंढते समय जाति और धर्म के आधार पर खुलेआम भेदभाव होता है। आकड़े से साफ स्पष्ट है की यह वही छात्र हैं जो अन्य धर्म तथा हिन्दू जाति व्यवस्था में निम्न स्थान पर आते हैं उन्ही के साथ भेदभाव देखने को मिल रहा है। कुछ ऐसे भी छात्र हैं जो अन्य पिछड़ा वर्ग से भी आते हैं जिन्होंने अपने शैक्षिक प्रवास के दौरान भेदभाव का सामना किया है। यह दर्शाता है कि निजी स्थान (किराए का कमरा) अभी भी अस्पृश्यता और सामाजिक दूरी की प्रथाओं से प्रभावित है। आधिकांश छात्र निम्न मध्यम वर्ग के होने के कारण उनका समय पर सफल होना एक आवश्यक चुनौती होता है। समय पर सफलता न मिलने पर आधिकांश छात्र जैसा की आकड़ों से प्रदर्शित होता है (62.2%), पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक दबाव के दुष्चक्र में फस जाते हैं, जिससे न केवल आर्थिक नुकसान होता है बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा भी गिरती है। इस प्रवास की प्रक्रिया में जिस प्रवासी छात्रों की आर्थिक पृष्टभूमि मजबूत होती है वो छात्र दीर्घ समय तक गंतव्य स्थल पर तैयारी करते हैं और उन छात्रों की तुलना में जिनका आर्थिक पृष्टभूमि मजबूत नहीं होती है उनसे अधिक सफल होने की सम्भावना होती है। भेदभाव और असुरक्षा की भावना छात्रों को अपनी मौलिक पहचान (primordial Identity) के आधार पर विशिष्ट इलाकों में रहने के लिए मजबूर करती है (जैसे अंबेडकर लॉज का उदाहरण)। यह प्रक्रिया शहरीकरण के बावजूद नृजातीय पड़ोस का निर्माण और समेकन करती है, जो एकता और समाजीकरण की प्रक्रिया को चुनौती देती है। जिन छात्रों को गंतव्य स्थल पर मित्रों या रिश्तेदारों का नेटवर्क मिलता है, वे जल्दी समायोजित हो पाते हैं और सही मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, जबकि नेटवर्क के अभाव वाले छात्रों को समायोजन में अधिक संघर्ष करना पड़ता है। यह आमतौर पर माना जाता था कि शिक्षा में बेहतरीन काम करने वाले शहरी केंद्र में असमानता और भेदभाव का हमेशा से बनी रहने वाली संरचना पूरी तरह से नहीं होती और वे इससे बच निकलेंगे, लेकिन असल में वे संस्थागत भेदभाव के आयाम और सूक्ष्म केंद्र के तौर पर काम करते रहते हैं जो शिक्षा और आर्थिक गतिशीलता की चाह रखने वालों के लिए बंद दरवाज़े की तरह काम करते हैं, जो ज़्यादातर समाज में पिछड़े तबके से आते हैं। प्रयागराज में शिक्षा के प्रवास में सकारात्मकता भी देखने को मिलती है विभिन्न जाति और धर्म के छात्र अक्सर एक कमरे में साथ रहते हैं और खाना साझा करते हैं जिससे आपसी समायोजन, सहिष्णुता और सद्भावना की समझ बढ़ती है। यह जाति-आधारित भेदभाव को तोड़ता है। हालाँकि संघर्ष और समायोजन की समस्या भी है खान-पान, विचारधारा और जाति/धर्म के प्रति गहरी भावनाएँ अभी भी छात्रों के बीच टकराव पैदा करती हैं, जिससे कई छात्र अलगाव (अकेले रहना) या अपने जातीय समूह के साथ रहना पसंद करते हैं। यह दर्शाता है कि सम्मानजनक सह अस्तित्व एक सतत संघर्ष है जहाँ नृजातिकेन्द्रीयता की भावना अभी भी प्रबल है।

सन्दर्भ सूची

Ono, H. (2001). *Migration Patterns Among Japanese University Students*. paper presented at the Centre for Economic Policy Research Conference of the European Network on the Japanese Economy, Oxford.

Bourdieu, Pierre, Passeron Jean Claude (1977). *Reproduction in Education, Society and Culture*. Sage Publications. London Newbury Park.

Lee, Everett S. (1966). *A Theory of Migration*. Demography. (3). pp 47-57.

Lee, M and Bray, M (2007). *Cross-Border Flows of Students for Higher Education: Push-Pull Factors and Motivations of Mainlands*

Chinese Students in Hong Kong and Macau. Higher Education, (1). pp. 791-818.

Pradhan, S. (2023). *Exploring the Causes of Student Migration in India: The Case of National Capital Region.* Development Outlook of Education and Migration. (1). pp. 127-141.

Pradhan, S. (2017). *An Analysis of Trends, Patterns and Characteristics of Educational Migration in India.* Contribution to Indian Social Science. (36).

Sumner, William Graham, (1906). *Folkways*. *The Athenaeum Press Guinn & Co., U.S.A.*

Jayanta, N., (2025). *Trends and Patterns of Educational Migration in India (1991-2021) – A Conceptual Study.* Holistic Research Perspective. (12)

Wenhorst, V., & Dzick, J. V. (Eds.). (2011). A*n Analysis of Trends in Spatial Mobility of Dutch Graduates*. Spatial Economic Analysis. (6). pp. 57-78